

गुणनि धामु श्रीरामु

७०

कुझु दीहँ वरी कराचीअ में, थियो सत्संगु सोभारो ।
 रतो रहे रस रंगिड़ो, रातियां दिहाड़ो ॥
 पहिरियाई वचन सन्तनि जा, थियनि सुखदाई ।
 पोइ चरित्र जी सुधा, साहिब वर्षाई ॥
 नितु श्रीराम कथा जा, थियनि अपूर्व आनन्द ।
 कदहिं बाल विनोदड़ा, कर्दी व्याह लीला सुखकन्द ॥
 कर्दी बन गमन जी, थिए विरह कथा विस्तारु ।
 कदहिं रघुवर जो चवनि, शीलु सुभाउ उदारु ॥
 धुमें नितु गुण गलियुनि में, श्री मैगसिचन्दु मनठारु ।
 सराहींनि सत्संग में, दशरथ राजकुमारु ॥
 रूप उजागरु शोभा सागरु, प्यारो श्री रघु लालु ।
 कौशल्या कुखि मण्डन जो, वाह जो रूपु रसालु ॥
 कोट काम खां सरिसु आ, शोभा रघुकुल चन्द ।
 कोट सूरज खां तेज में, तेजवन्तु सुख कन्दु ॥
 मर्कत मणि सम अंगनि जी, दिव्य मनोहर कांति ।
 कोटि दामिनि जी दमक आ, रघुवर दशननि पांति ॥
 अंग-अंग मां रूप जी, वर्षा नितु वरिषे ।

पुरिजन परिजन मोर मन, दिंसी दिंसी हरषे ॥
 श्रीरामचन्द्र मुखचन्द्र जा, थिया किरोड़ें नैन चकोर ।
 रूप सुधा जो पानु कनि, ना ज़ाणिनि निशि भोर ॥
 सत् चित् आनन्दु रूपु आ, प्यारो अवध विहारी ।
 सत रज तम खां पारि आ, सुन्दरु सुखकारी ॥
 ज्ञान शक्ति बल तेज में, पूर्णु श्री रघुवीरु ।
 ऐश्वर्य, माधुर्य, सौशील्य में, साहिबु घणो सुधीरु ॥
 वात्सल्य आर्ज्व, सुहृदिता, जहिंजी अपरम्पार ।
 सर्व शरण्य सोम्य छटा, धीरज दया भण्डार ॥
 परम कुलीन सर्वलोक हित, नियत् आत्मा नाथु ।
 द्युतिमानु, बुद्धिमानु प्रभु, सुर मुनि नाईनि माथु ॥
 ब्रिया भी घणा विचित्र गुण, श्री रघुवर में आहीनि ।
 सेई समुझनि गाइनि सेई, जेके लिंग लाईनि ॥
 पोइ दास चयो- कृपा करे, सभु खोले समुझायो ।
 रघुवर दिव्य गुणनि जो, अर्थिड़ो .बुधायो ॥
 साहिबनि चयो सनेह सां, .बुधो चितु देई ।
 वसायो गुण गलीअ में, मनु सुरिति बेई ॥
 देश काल सभु वस्तु जी, पूर्णु हिंय पहिचान ।
 इहो गुणु आ ज्ञान जो, प्यारे राम सुजान ॥
 अघटन घटना करण में, सर्मथु आ श्रीरामु ।
 इहो सुन्दरु शक्ति गुणु, श्यामसुन्दर सुखधामु ॥
 बल गुण जो इहो अर्थु आ, सकल विश्व आधारु ।

मच्छर खे ब्रह्मा करे, रघुकुल चन्दु उदारु ॥
 रवि शशि अग्नीअ खे सदां, जहिं तेज मां तेजु मिले ।
 सो तेजवन्तु श्री रामु आ, ज़ाणो भांति भले ॥
 कहिंखां हारियो कीन की, सदां अजितु श्री रामु ।
 पर प्रेमियुनि जे पद कमल में, सदां करे प्रणामु ॥
 अमित परिश्रम करण सां, जहिं थकु न थिए कदहीं ।
 वीर्यवानु श्री राम खे, श्रुतीअ चयो तदहीं ॥
 कुल धर्म गुण हीन भी, जे दीनता उर धारे ।
 तहिं पंहिजो करे रघुवीरु थो, कदहिं न विसारे ॥
 इहो सौशील्यु गुणु सज़ण में, सन्तनि कथनु कयो ।
 सो तरण तारणु थियो जग में, जहिं मुहिंजो रामु चयो ॥
 जन अवगुण दिसे कीन की, इहो वात्सल्य गुणु रघुवीर ।
 सदां द्रवित रहे दीन ते, दीन बन्धु दिलि धीर ॥
 पहिंजे जन खे पाण खां, ऊचो करे मजे ।
 इहो सुहृदु गुणु रघुनाथ जो, कदहिं कीन वजे ॥
 किविलीअ खां ब्रह्मा तलकि, सभ जो रक्षक रामु ।
 इहो सर्व शरप्य गुणु, वेद चयो अभिरामु ॥
 जहिंजे प्रिय दर्शन सां, नेणनि वधे खुमारु ।
 सो सोम्य गुणु सुखमा सदन, सन्तनि चयो पुकार ॥
 हिक नज़र सां पलक में, दीननि दुख हरे ।
 सो कारुण्य गुणु श्री राम जो, बुधन्दे जीउ ठरे ॥
 दान दियण युद्ध करण में, अचलु सुमेर समानु ।

इहा स्थरता रघुवीर जी, वेद करिनि प्रमाणु ॥
 पहिजे वचन पालण में, दुख भी सहनु करे ।
 धीरज में रघुनाथ जी, समता केरु भरे ॥
 दुखी दिसी कंहि जीव खे, नैन वहाए नीरु ।
 बिन कारण दुख दूर करे, समर्थु श्री रघुवीरु ॥
 वैरियुनि जे दुख नाश लाइ, जो जतन करे साई ।
 सो दया आरिद्रु दातारु आ, रघुनाथ गोसाई ॥
 जहिजे श्री मुख चन्द्र मां, वर्षे अँमृत मीहुं ।
 सो माधुर्य गुणु श्रीराम जो, से ज़ाणिनि लाईनि नीहु ॥
 योगियुनि जे मन खे सदां, जहिं पाण में रमायो ।
 खीर में गिह वांगिया सदां, जो सभ में समायो ॥
 मुनी बि जहिंजी छबि दिसी, ब्रह्म समाधि भुलाईनि ।
 सो सर्व रमणु श्री रामु आ, जहिं खे जड़ चेतन गाईनि ॥
 दिलिबर दशरथ सुवन खे, जिनि बि दिठो हिक वार ।
 से गूँ . गुड़ जियां मगनु थी, चई न सघनि सुखसार ॥
 विधि, महेशु, रमेशु भी, जहिं सिरड़ो झुकाए ।
 सो प्रसिद्ध ईशु श्री रामचन्दु , दशरथ सुतु आहे ॥
 मनु आत्मा सभ जो छिके, पाण दे नित्य किशोरु ।
 सो नियतात्मा श्री रामु आ, रसिकनि जो चित चोरु ॥
 महां विराट जो तेजु बलु, जहिंजे कण मटु कीन थिए ।
 सो महावीर्यु श्री रामु आ, जहिंखे दिसी माउ जीए ॥

सर्व काल में एक रसु, छबि सुखमा सागरु ।
द्युतिमानु प्यारो रामु आ, सभ गुण में आगरु ॥
हर्ष, शोक, सुख दुख खां, पारि रहे प्यारो ।
सो धृतमानु रघुवीरु आ, निर्मलु नामियारो ॥
सभिनी खे थो वसि करे, दिव्य गुणनि सां जोई ।
वशी रामु सोई, वेद चवनि था प्यार सां ॥